

Chapter ग्यारह

कृष्ण की बाल-लीलाएँ

इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह गोकुलवासी गोकुल छोड़ कर वृन्दावन चले गये और किस तरह कृष्ण ने वत्सासुर तथा बकासुर का वध किया।

जब यमल अर्जुन वृक्ष धम्म से गिरे तो वज्रपात की भाँति जोरदार शोर हुआ। चकित हुए कृष्ण के पिता नन्द तथा गोकुल के अन्य वृद्ध निवासी उस स्थान पर गये जहाँ उन्होंने वृक्षों को गिरे हुए तथा लकड़ी की उलूखल से बँधे कृष्ण को उनके बीच खड़ा पाया। उन्हें वृक्षों के गिरने तथा वहाँ पर कृष्ण के होने का कोई कारण नहीं दिखा। उन्होंने सोचा कि यह किसी अन्य असुर की करतूत हो सकती है, जो कृष्ण से वहाँ पर मिला होगा। उन्होंने कृष्ण के संगियों से पूछा कि यह घटना किस तरह घटी? बालकों ने पूरी घटना ठीक तरह कह सुनाई किन्तु वृद्धजनों को इस कथा पर विश्वास नहीं हुआ। कुछ लोगों ने सोचा कि यह घटना सच हो सकती है क्योंकि इसके पूर्व वे कृष्ण के साथ अनेक अद्भुत घटनाएँ देख चुके थे। खैर, नन्द महाराज ने तुरन्त ही कृष्ण की रस्सियाँ खोल दीं।

इस तरह कृष्ण प्रतिदिन और प्रतिक्षण नन्द महाराज तथा यशोदा के वात्सल्य-प्रेम को बढ़ाने के लिए एक से एक अद्भुत घटनाओं का प्रदर्शन करते रहे जिससे उनको आश्चर्य तथा हर्ष का अनुभव

होता रहा। यमलार्जुन का गिराना ऐसी अद्भुत लीलाओं में से एक थी।

एक दिन एक फल बेचने वाली स्त्री नन्द महाराज के घर के निकट आयी तो कृष्ण घर से अपनी छोटी-सी अंजुली में थोड़ा अन्न लेकर उसके बदले में फल लेने के लिए उसके पास पहुँचे। रास्ते में उनकी हथेली से लगभग सारा अन्न गिर गया था केवल एक या दो दाने मुश्किल से बचे होंगे। किन्तु फल बेचने वाली स्त्री ने स्नेहवश इन दानों के बदले कृष्ण की इच्छानुसार फल दे दिये। ज्योंही उसने ऐसा किया, उसकी डलिया सोने तथा रत्नों से भर गई।

तत्पश्चात् सारे गोपों ने गोकुल छोड़ने का निश्चय कर लिया क्योंकि उन्होंने देखा कि गोकुल में नित्य ही उपद्रव होते रहते थे। उन्होंने वृन्दावन अथवा व्रजधाम जाने का निश्चय किया और अगले ही दिन वे वहाँ से खाना हो गये। कृष्ण तथा बलराम ने अपनी बाल-लीलाएँ समाप्त करके वृन्दावन में बछड़ों का भार सँभाल लिया और उन्हें चरागाहों (गो चरण) तक चराने ले जाने लगे। इस अवधि में वत्सासुर नामक राक्षस बछड़ों के बीच में घुस आया जिसका कृष्ण ने वध कर दिया। एक अन्य असुर जो बड़े बगुले की आकृति का था (बकासुर), मारा गया। जब कृष्ण के साथियों ने ये कथाएँ अपनी अपनी माताओं को सुनाई तो वे इन पर विश्वास नहीं कर पाई किन्तु स्नेह से पूर्ण होने के कारण उन्होंने कृष्ण के कार्यकलापों की इन कथाओं का आनन्द अवश्य लिया।

श्रीशुक उवाच

गोपा नन्दादयः श्रुत्वा द्रुमयोः पततो रवम् ।

तत्राजग्मुः कुरुश्रेष्ठ निर्घातभयशङ्किताः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; गोपाः—सारे ग्वाले; नन्द-आदयः—नन्द महाराज इत्यादि; श्रुत्वा—सुन कर; द्रुमयोः—दोनों वृक्षों के; पततोः—गिरने की; रवम्—तेज आवाज, वज्रपात जैसी; तत्र—वहाँ, उस स्थान पर; आजग्मुः—गये; कुरु-श्रेष्ठ—हे महाराज परीक्षित; निर्घात-भय-शङ्किताः—वज्रपात होने से भयभीत।

शुकदेव गोस्वामी ने आगे कहा : हे महाराज परीक्षित, जब यमलार्जुन वृक्ष गिर पड़े तो

आसपास के सारे ग्वाले भयानक शब्द सुन कर वज्रपात की आशंका से उस स्थान पर गये।

भूम्यां निपतितौ तत्र ददृशुर्यमलार्जुनौ ।

बभ्रमुस्तदविज्ञाय लक्ष्यं पतनकारणम् ॥ २ ॥

शब्दार्थ

भूम्याम्—भूमि पर; निपतितौ—गिरे हुए; तत्र—वहाँ; ददृशुः—सबों ने देखा; यमल-अर्जुनौ—अर्जुन वृक्ष के जोड़े को; बभ्रमुः—मोहग्रस्त हो गये; तत्—वह; अविज्ञाय—पता न लगा सके; लक्ष्यम्—यह देखते हुए भी कि वृक्ष गिरे हैं; पतन-कारणम्—गिरने का कारण (सहसा ऐसा कैसे हुआ?)।

वहाँ उन सबों ने यमलार्जुन वृक्षों को जमीन पर गिरे हुए तो देखा किन्तु वे विमोहित थे क्योंकि वे आँखों के सामने वृक्षों को गिरे हुए तो देख रहे थे किन्तु उनके गिरने के कारण का पता नहीं लगा पा रहे थे।

तात्पर्य : सभी परिस्थितियों पर विचार करने पर प्रश्न उठता है कि क्या यह कृष्ण की करतूत है? वे तो उसी स्थान पर खड़े थे और उनके साथियों ने कह सुनाया कि यह सब कुछ कृष्ण ने किया था। क्या सचमुच कृष्ण ने ऐसा किया था या वह मनगढ़ंत कहानी थी? विमोहित होने का कारण यही था।

उलूखलं विकर्षन्तं दाम्ना बद्धं च बालकम् ।

कस्येदं कुत आश्चर्यमुत्पात इति कातराः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

उलूखलम्—ओखली को; विकर्षन्तम्—खींचते हुए; दाम्ना—रस्सी से; बद्धम् च—तथा उदर से बंधी; बालकम्—कृष्ण को; कस्य—किसका; इदम्—यह; कुतः—कहाँ से; आश्चर्यम्—ये अद्भुत घटनाएँ; उत्पातः—उपद्रव; इति—इस प्रकार; कातराः—अत्यधिक क्षुब्ध।

कृष्ण रस्सी द्वारा ओखली से बंधे थे जिसे वे खींच रहे थे। किन्तु उन्होंने वृक्षों को किस तरह गिरा लिया? वास्तव में किसने यह किया? इस घटना का स्रोत कहाँ है? इन आश्चर्यजनक बातों को सोच सोच कर सारे ग्वाले सशंकित तथा मोहग्रस्त थे।

तात्पर्य : सारे ग्वाले अत्यन्त क्षुब्ध थे क्योंकि बालक कृष्ण दोनों वृक्षों के बीच खड़ा था और यदि संयोगवश ये वृक्ष उस पर गिर जाते तो वह चटनी हो जाता। किन्तु वह जैसे का तैसा खड़ा था और फिर भी घटना घट गई। तो फिर यह सब किसने किया? ये सारी घटनाएँ इस आश्चर्यमय ढंग से कैसे घटीं? उनके क्षुब्ध तथा मोहित होने का कारण यही शंकाएँ थीं। किन्तु उन्होंने सोचा कि दैववश कृष्ण सुरक्षित है, अतः उसे कुछ भी नहीं हुआ।

बाला ऊचुरनेनेति तिर्यगतमुलूखलम् ।

विकर्षता मध्यगेन पुरुषावप्यचक्ष्महि ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

बालाः—सारे बालकों ने; ऊचुः—कहा; अनेन—उसके (कृष्ण) द्वारा; इति—इस प्रकार; तिर्यक्—टेढ़ी; गतम्—हुई; उलूखलम्—ओखली; विकर्षता—कृष्ण द्वारा खींचे जाने से; मध्य-गेन—दोनों वृक्षों के बीच जाकर; पुरुषौ—दो सुन्दर व्यक्ति; अपि—भी; अचक्ष्महि—हमने अपनी आँखों से देखा है।

तब सारे ग्वालबालों ने कहा : इसे तो कृष्ण ने ही किया है। जब यह दो वृक्षों के बीच में था, तो ओखली तिरछी हो गई। कृष्ण ने ओखली को खींचा तो दोनों वृक्ष गिर गये। इसके बाद इन वृक्षों से दो सुन्दर व्यक्ति निकल आये। हमने इसे अपनी आँखों से देखा है।

तात्पर्य : कृष्ण के साथी कृष्ण के पिता को यह कह कर पूरी स्थिति बताना चाह रहे थे कि न केवल वृक्ष ही टूट कर गिरे अपितु इन टूटे वृक्षों से दो सुन्दर व्यक्ति निकल आये। उन्होंने बतलाया, “ये सारी बातें घटीं हैं और इन्हें हमने आँखों से देखा है।”

न ते तदुक्तं जगृहुर्न घटेतेति तस्य तत् ।

बालस्योत्पाटनं तर्वोः केचित्सन्दिग्धचेतसः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

न—नहीं; ते—सारे गोप; तत्-उक्तम्—बालकों द्वारा कहे गये; जगृहुः—स्वीकार करेंगे; न घटेत—ऐसा नहीं हो सकता; इति—इस प्रकार; तस्य—कृष्ण का; तत्—काम; बालस्य—कृष्ण जैसे बालक का; उत्पाटनम्—जड़ समेत उखाड़ना; तर्वोः—दोनों वृक्षों का; केचित्—किसी ने; सन्दिग्ध-चेतसः—क्या किया जा सकता है इसके विषय में सशंकित (क्योंकि गर्गमुनि ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक नारायण के समान होगा)।

तीव्र पितृ-स्नेह के कारण नन्द इत्यादि ग्वालों को विश्वास ही नहीं हुआ कि कृष्ण ने इतने आश्चर्यमय ढंग से वृक्षों को उखाड़ा है। अतएव उन्हें बच्चों के कहने पर विश्वास नहीं हुआ। किन्तु उनमें से कुछ को सन्देह था। वे सोच रहे थे, “चूँकि कृष्ण के लिए भविष्यवाणी की गई थी कि वह नारायण के तुल्य है अतएव हो सकता है कि उसी ने यह किया हो।”

तात्पर्य : एक विचार यह था कि वृक्षों को गिराने जैसा कार्य ऐसे छोटे बालक के लिए असम्भव था। किन्तु कुछेक को सन्देह था कि कृष्ण को नारायण के तुल्य बतलाया जा चुका है। अतएव ग्वाले दुविधा में थे।

उलूखलं विकर्षन्तं दाम्ना बद्धं स्वमात्मजम् ।

विलोक्य नन्दः प्रहसद्बदनो विमुमोच ह ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

उलूखलम्—ओखली को; विकर्षन्तम्—खींचते हुए; दाम्ना—रस्सी से; बद्धम्—बँधा हुआ; स्वम् आत्मजम्—अपने पुत्र कृष्ण को; विलोक्य—देख कर; नन्दः—नन्द महाराज; प्रहसत्-बदनः—इस अद्भुत बालक को देखकर मुसकाते चेहरे से; विमुमोच ह—उसे बन्धन से मुक्त कर दिया।

जब नन्द महाराज ने अपने पुत्र को रस्सी द्वारा लकड़ी की ओखली से बाँधा और ओखली को घसीटते देखा तो वे मुसकाने लगे और उन्होंने कृष्ण को बन्धन से मुक्त कर दिया।

तात्पर्य : नन्द महाराज को आश्चर्य हो रहा था कि कृष्ण की माता यशोदा ने अपने प्यारे बेटे को इस तरह से बाँधा हो। कृष्ण तो उससे प्रेम का आदान-प्रदान करता है, तो फिर वह इतनी क्रूर कैसे बन गई कि उसे लकड़ी की ओखली से बाँध दिया? इस प्रेम-व्यापार को समझ कर नन्द हँस पड़े और उन्होंने कृष्ण को मुक्त कर दिया। दूसरे शब्दों में, जिस तरह भगवान् कृष्ण जीव को सकाम कर्मों से बाँधते हैं उसी तरह वे माता यशोदा तथा नन्द महाराज को वात्सल्य-प्रेम में बाँधते हैं। यही उनकी लीला है।

गोपीभिः स्तोभितोऽनृत्यद्भगवान्बालवत्क्वचित् ।

उद्गायति क्वचिन्मुग्धस्तद्वशो दारुयन्त्रवत् ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

गोपीभिः—गोपियों के द्वारा; स्तोभितः—प्रोत्साहित, प्रेरित; अनृत्यत्—बालक कृष्ण नाचता; भगवान्—भगवान् होकर के भी; बाल-वत्—मानवी बालक के ही समान; क्वचित्—कभी; उद्गायति—जोर से गाता है; क्वचित्—कभी; मुग्धः—चकित होकर; तत्-वशः—उनके वशीभूत होकर; दारु-यन्त्र-वत्—कठपुतली की तरह।

गोपियाँ कहतीं, “हे कृष्ण, यदि तुम नाचोगे तो तुम्हें आधी मिठाई मिलेगी। ऐसे शब्द कह कर या तालियाँ बजा-बजा कर सारी गोपियाँ कृष्ण को तरह-तरह से प्रेरित करतीं। ऐसे अवसरों पर वे परम शक्तिशाली भगवान् होते हुए भी मुसका देते और उनकी इच्छानुसार नाचते मानों वे उनके हाथ की कठपुतली हों। कभी कभी वे उनके कहने पर जोर-जोर से गाते। इस तरह कृष्ण पूरी तरह से गोपियों के वश में आ गये।”

बिभर्ति क्वचिदाज्ञप्तः पीठकोन्मानपादुकम् ।

बाहुक्षेपं च कुरुते स्वानां च प्रीतिमावहन् ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

बिभर्ति—कृष्ण खड़े हो जाते और वस्तुओं को इस तरह छूते मानों उठा नहीं पाते; क्वचित्—कभी; आज्ञप्तः—आदेश दिये जाने पर; पीठक-उन्मान—पीढ़ा (लकड़ी का) तथा काठ का नपना; पादुकम्—खड़ाऊँ को; बाहु-क्षेपम् च—तथा शरीर पर हाथ मारते, ताल ठोंकते; कुरुते—करता है; स्वानाम् च—तथा अपने सम्बन्धियों, गोपियों तथा अन्य मित्रों का; प्रीतिम्—आनन्द; आवहन्—बुलाते हुए।

कभी कभी माता यशोदा तथा उनकी गोपी सखियाँ कृष्ण से कहतीं, “जरा यह वस्तु लाना, जरा यह वस्तु लाना।” कभी वे उनको पीढ़ा लाने, तो कभी खड़ाऊँ या काठ का नपना लाने के

लिए आदेश देतीं और कृष्ण माताओं द्वारा इस तरह आदेश दिये जाने पर उन वस्तुओं को लाने का प्रयास करते। किन्तु कभी कभी वे उन वस्तुओं को इस तरह छूते मानो उठाने में असमर्थ हों और वहीं खड़े रहते। अपने सम्बन्धियों का हर्ष बढ़ाने के लिए वे दोनों हाथों से ताल ठोंक कर दिखाते कि वे काफी बलवान् हैं।

दर्शयंस्तद्विदां लोक आत्मनो भृत्यवश्यताम् ।

व्रजस्योवाह वै हर्ष भगवान्बालचेष्टितैः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

दर्शयन्—दिखलाते हुए; तत्-विदाम्—कृष्ण के कार्यों को समझने वाले पुरुषों को; लोके—सारे जगत में; आत्मनः—अपने आप को; भृत्य-वश्यताम्—अपने दासों या भक्तों के आदेशों का पालन करने के लिए तैयार रहने वाले; व्रजस्य—व्रजभूमि के; उवाह—सम्पन्न किया; वै—निस्सन्देह; हर्षम्—आनन्द; भगवान्—भगवान्; बाल-चेष्टितैः—बच्चों के जैसे कार्यों द्वारा।

भगवान् कृष्ण ने अपने कार्यकलापों को समझने वाले संसार-भर के शुद्ध भक्तों को दिखला दिया कि किस तरह वे अपने भक्तों अर्थात् दासों द्वारा वश में किये जा सकते हैं। इस तरह अपनी बाल-लीलाओं से उन्होंने व्रजवासियों के हर्ष में वृद्धि की।

तात्पर्य : यह एक अन्य दिव्य हास्य-रस है कि कृष्ण अपने भक्तों के आनन्द-वर्धन के लिए बाल-लीलाएँ करते थे। वे इन लीलाओं को न केवल व्रजभूमि के निवासियों को दिखलाते थे अपितु अन्यो को भी जो उनकी बहिरंगा शक्ति तथा ऐश्वर्य पर मुग्ध हो जाते थे। किन्तु अन्तरंगी भक्तों को जो केवल कृष्ण-प्रेम में निमग्न रहते थे तथा बाह्य भक्तों को जो उनकी असीम शक्ति पर मुग्ध रहते थे कृष्ण की अपने दासों के वश में रहने की इच्छा का पता चला।

क्रीणीहि भोः फलानीति श्रुत्वा सत्वरमच्युतः ।

फलार्थी धान्यमादाय ययौ सर्वफलप्रदः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

क्रीणीहि—आकर खरीदें; भोः—हे पड़ोसियों; फलानि—पके फलों को; इति—इस प्रकार; श्रुत्वा—सुन कर; सत्वरम्—शीघ्र; अच्युतः—कृष्ण; फल-अर्थी—मानो उन्हें फल चाहिए; धान्यम् आदाय—कुछ धान लाकर; ययौ—फल बेचने वाली के पास गये; सर्व-फल-प्रदः—हर एक को सभी फल प्रदान करने वाले भगवान् को अब फल चाहिए थे।

एक बार एक फल बेचने वाली स्त्री पुकार रही थी, “हे व्रजभूमिवासियो, यदि तुम लोगों को फल खरीदने हैं, तो मेरे पास आओ।” यह सुन कर तुरन्त ही कृष्ण ने कुछ अन्न लिया और सौदा करने पहुँच गये मानो उन्हें कुछ फल चाहिए थे।

तात्पर्य : सामान्यतया आदिवासी लोग गाँवों में फल बेचने जाते हैं। यहाँ पर बताया गया है कि आदिवासी कृष्ण से कितने अनुरक्त थे। आदिवासियों पर अनुग्रह करने के लिए वे तुरन्त अंजुरी में धान लेकर फल खरीदने चले आये क्योंकि अन्यो को ऐसा करते उन्होंने देखा था।

फलविक्रयिणी तस्य च्युतधान्यकरद्वयम् ।

फलैरपूरयद्रत्नैः फलभाण्डमपूरि च ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

फल-विक्रयिणी—फल बेचने वाली आदिवासिनी; तस्य—कृष्ण का; च्युत-धान्य—बदलने के लिए जो धान लाये थे वह गिर गया; कर-द्वयम्—अँजुली; फलैः अपूरयत्—फलवाली ने उनकी छोटी हथेलियों को फलों से भर दिया; रत्नैः—रत्नों तथा सोने के बदले में; फल-भाण्डम्—फल की टोकरी; अपूरि च—भर गई।

जब कृष्ण तेजी से फलवाली के पास जा रहे थे तो उनकी अँजुली में भरा बहुत-सा अन्न गिर गया। फिर भी फलवाली ने उनके दोनों हाथों को फलों से भर दिया। उधर उसकी फल की टोकरी तुरन्त रत्नों तथा सोने से भर गई।

तात्पर्य : भगवद्गीता (९.२६) में कृष्ण कहते हैं—

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।

तदहं भक्त्युपहतम् अश्नामि प्रयतात्मनः ॥

कृष्ण इतने कृपालु हैं कि यदि कोई उन्हें एक पत्ती, एक फल, एक फूल या थोड़ा जल भी अर्पित करता है, तो वे उसे तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। शर्त केवल इतनी ही है कि ये चीजें भक्तिपूर्वक समर्पित की जाँय (*यो मे भक्त्या प्रयच्छति*)। अन्यथा यदि कोई यह सोच कर मिथ्या प्रतिष्ठा से फूल कर कुप्पा हुआ रहे कि मेरे पास इतना ऐश्वर्य है और मैं कृष्ण को थोड़ा दे रहा हूँ तो कृष्ण इस भेंट को स्वीकार नहीं करते। फल बेचने वाली ने, निर्धन आदिवासी होते हुए भी कृष्ण से बहुत ही स्नेहपूर्ण बर्ताव किया और कहा, “कृष्ण! तुम अन्न के बदले मुझसे फल लेने आये हो। तुमने सारा अन्न गिरा दिया है फिर भी तुम जो चाहो सो ले लो।” इस तरह उसने कृष्ण की हथेली में उतने फल रख दिये जितने उसमें आ सकते थे। बदले में कृष्ण ने उसकी सारी डलिया को रत्नों तथा सोने से भर दिया।

इस घटना से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि कृष्ण को स्नेह के साथ अर्पित की गई वस्तु के बदले वे भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप में लाखों गुना बढ़ाकर दे सकते हैं। मूल बात है प्रेम का विनिमय। इसीलिए भगवद्गीता (९.२७) में कृष्ण शिक्षा देते हैं—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् ।

यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥

“हे कुन्ती-पुत्र! तुम जो भी करते हो, जितना खाते हो, जितना भी होम करते हो, या दान में देते हो तथा जितनी भी तपस्या करते हो वह सब मुझे भेंट स्वरूप दो।” मनुष्य को चाहिए कि अपनी आमदनी में से कुछ कुछ कृष्ण को प्रेमपूर्वक अर्पित करे। तभी मनुष्य का जीवन सफल होगा। कृष्ण समस्त ऐश्वर्यों से पूर्ण हैं, उन्हें किसी से कुछ भी नहीं चाहिए। किन्तु यदि कोई कृष्ण को कुछ देना चाहता है, तो इसमें उसी का लाभ है। इस सम्बन्ध में यह दृष्टान्त दिया जाता है कि जब किसी का मुख सजा होता है, तो उसके मुख का प्रतिबिम्ब स्वतः सजा होता है। इसी प्रकार यदि हम अपने ऐश्वर्य से कृष्ण की सेवा करें तो बदले में कृष्ण के अंश या प्रतिबिम्ब रूप हम सुखी होंगे। कृष्ण सदा सुखी रहते हैं क्योंकि वे *आत्माराम* हैं अर्थात् अपने ही ऐश्वर्य से पूरी तरह संतुष्ट।

सरित्तीरगतं कृष्णं भग्नार्जुनमथाह्वयत् ।

रामं च रोहिणी देवी क्रीडन्तं बालकैर्भृशम् ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

सरित्-तीर—नदी के किनारे; गतम्—गये हुए; कृष्णम्—कृष्ण को; भग्न-अर्जुनम्—यमलार्जुन खंडित करने की लीला के बाद; अथ—तब; आह्वयत्—बुलाया; रामम् च—तथा बलराम को; रोहिणी—बलराम की माता ने; देवी—लक्ष्मी; क्रीडन्तम्—खेल में व्यस्त; बालकैः—अनेक बालकों के साथ; भृशम्—अत्यन्त मनोयोग से।

यमलार्जुन वृक्षों के उखड़ जाने के बाद एक बार रोहिणीदेवी राम तथा कृष्ण को, जो नदी के किनारे गये हुए थे और अन्य बालकों के साथ बड़े ध्यान से खेल रहे थे, बुलाने गईं।

तात्पर्य : यद्यपि रोहिणीदेवी बलराम की माता थीं किन्तु माता यशोदा रोहिणी की अपेक्षा कृष्ण तथा बलराम से अधिक अनुरक्त थीं। माता यशोदा ने रोहिणी को भेजा कि वे राम तथा कृष्ण को उनके खेल से बुला लायें क्योंकि दोपहर के भोजन का समय हो चुका था। अतः रोहिणीदेवी उन्हें अपना खेलना छोड़ कर आने के लिए बुलाने गईं।

नोपेयातां यदाहूतौ क्रीडासङ्गेन पुत्रकौ ।

यशोदां प्रेषयामास रोहिणी पुत्रवत्सलाम् ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

न उपेयाताम्—लौटे नहीं; यदा—जब; आहूतौ—खेल से बुला भेजे गये; क्रीडा-सङ्गेन—अन्य बालकों के साथ खेलने में इतना अनुरक्त होने के कारण; पुत्रकौ—दोनों पुत्र (कृष्ण तथा बलराम); यशोदाम् प्रेषयाम् आस—उन्हें बुलाने के लिए यशोदा को भेजा; रोहिणी—माता रोहिणी ने; पुत्र-वत्सलाम्—क्योंकि माता यशोदा कृष्ण तथा बलराम के प्रति अधिक वत्सल थीं।

अन्य बालकों के साथ खेलने में अत्यधिक अनुरक्त होने के कारण वे रोहिणी के बुलाने पर वापस नहीं आये। अतः रोहिणी ने उन्हें वापस बुलाने के लिए माता यशोदा को भेजा क्योंकि वे कृष्ण तथा बलराम के प्रति अत्यधिक स्नेहिल थीं।

तात्पर्य : यशोदां प्रेषयाम् आस—ये शब्द यह दिखलाते हैं कि जब रोहिणी के आदेश पर कृष्ण तथा बलराम ने लौटने की परवाह नहीं की तो रोहिणी ने सोचा कि यदि यशोदा बुलातीं तो वे लौट आये होते क्योंकि यशोदा उन दोनों को अधिक चाहती हैं।

क्रीडन्तं सा सुतं बालैरतिवेलं सहाग्रजम् ।

यशोदाजोहवीत्कृष्णं पुत्रस्नेहस्नुतस्तनी ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

क्रीडन्तम्—खेल में व्यस्त; सा—उस; सुतम्—अपने पुत्र को; बालैः—अन्य बालकों के साथ; अति-वेलम्—विलम्ब से; सह-अग्रजम्—अपने बड़े भाई बलराम के साथ खेल रहे; यशोदा—माता यशोदा ने; अजोहवीत्—बुलाया (अरे कृष्ण तथा बलराम आओ!); कृष्णम्—कृष्ण को; पुत्र-स्नेह-स्नुत-स्तनी—उन्हें बुलाते हुए स्नेह के कारण उनके स्तनों से दूध बहने लगा।

यद्यपि बहुत देर हो चुकी थी किन्तु कृष्ण तथा बलराम अपने खेल में अनुरक्त होने के कारण अन्य बालकों के साथ खेलते रहे। इसलिए अब माता यशोदा ने भोजन करने के लिए उन्हें बुलाया। कृष्ण तथा बलराम के प्रति उत्कट प्रेम तथा स्नेह होने से उनके स्तनों से दूध बहने लगा।

तात्पर्य : अजोहवीत् शब्द का अर्थ है “बारम्बार पुकारना।” उन्होंने पुकारा, “कृष्ण तथा बलराम! वापस आ जाओ। खाने को देर हो रही है। अब बहुत खेल चुके हो। वापस आओ।”

कृष्ण कृष्णारविन्दाक्ष तात एहि स्तनं पिब ।

अलं विहारैः क्षुत्क्षान्तः क्रीडाश्रान्तोऽसि पुत्रक ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

कृष्ण कृष्ण अरविन्द-अक्ष—हे कृष्ण, मेरे बेटे, कमल जैसे नेत्रों वाले कृष्ण; तात—हे प्रिय; एहि—यहाँ आओ; स्तनम्—मेरे स्तन के दूध को; पिब—पियो; अलम् विहारैः—इसके बाद खेलने की कोई आवश्यकता नहीं है; क्षुत्-क्षान्तः—भूख से थका; क्रीडा-श्रान्तः—खेलने से थका हुआ; असि—तुम हो; पुत्रक—हे पुत्र।

माता यशोदा ने कहा : हे प्रिय पुत्र कृष्ण, कमलनयन कृष्ण, यहाँ आओ और मेरा दूध पियो। हे प्यारे, तुम भूख से तथा इतनी देर तक खेलने से बहुत थक गये होगे। अब और अधिक

खेलना जरूरी नहीं।

हे रामागच्छ ताताशु सानुजः कुलनन्दन ।
प्रातरेव कृताहारस्तद्भवान्भोक्तुमर्हति ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

हे राम—मेरे प्यारे बलराम; आगच्छ—आओ; तात—मेरे प्रिय; आशु—शीघ्र; स-अनुजः—अपने छोटे भाई सहित; कुल-
नन्दन—हमारे परिवार की महान् आशा; प्रातः एव—सुबह के ही; कृत-आहारः—कलेवा किये हुए; तत्—इसलिए; भवान्—
तुम; भोक्तुम्—अधिक खाने के लिए; अर्हति—योग्य हो।

हमारे परिवार के सर्वश्रेष्ठ मेरे प्यारे बलदेव, तुरन्त अपने छोटे भाई कृष्ण सहित आ जाओ।

तुम दोनों ने सुबह ही खाया था और अब तुम्हें कुछ और खाना चाहिए।

प्रतीक्षते त्वां दाशार्हं भोक्ष्यमाणो ब्रजाधिपः ।
एह्यावयोः प्रियं धेहि स्वगृहान्यात बालकाः ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

प्रतीक्षते—प्रतीक्षा कर रही है; त्वाम्—तुम दोनों की; दाशार्हं—हे बलराम; भोक्ष्यमाणः—खाने की इच्छा रखते हुए; ब्रज-
अधिपः—ब्रज का राजा, नन्द महाराज; एहि—यहाँ आओ; आवयोः—हमारा; प्रियम्—हर्ष; धेहि—जरा विचार करो; स्व-
गृहान्—अपने अपने घरों को; यात—जाने दो; बालकाः—अन्य बालक।

अब ब्रज के राजा नन्द महाराज खाने के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हे मेरे बेटे बलराम,
वे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं अतः हमारी प्रसन्नता के लिए तुम वापस आ जाओ। तुम्हारे साथ
तथा कृष्ण के साथ खेल रहे सारे बालकों को अपने अपने घर जाना चाहिए।

तात्पर्य : ऐसा लगता है कि नन्द महाराज नियमित रूप से अपने दोनों पुत्रों, कृष्ण तथा बलराम के
साथ भोजन करते थे। यशोदा ने अन्य बालकों से कहा, “अब तुम सब अपने अपने घर जाओ।”
सामान्यतया पिता तथा पुत्र साथ साथ बैठते हैं इसलिए माता यशोदा ने कृष्ण तथा बलराम से लौट आने
की विनती की। उन्होंने अन्य बालकों को सलाह दी कि वे भी अपने अपने घर जाँय जिससे उनके
माता-पिता को उनकी प्रतीक्षा न करनी पड़े।

धूलिधूसरिताङ्गस्त्वं पुत्र मज्जनमावह ।
जन्मर्क्षं तेऽद्य भवति विप्रेभ्यो देहि गाः शुचिः ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

धूलि-धूसरित-अङ्गः त्वम्—तुम्हारा पूरा शरीर धूल से ढक गया है; पुत्र—मेरे बेटे; मज्जनम् आवह—आओ, स्नान करो तथा
अपनी सफाई करो; जन्म-ऋक्षम्—जन्म का शुभ नक्षत्र; ते—तुम्हारे; अद्य—आज; भवति—है; विप्रेभ्यः—शुद्ध ब्राह्मणों को;
देहि—दान में दो; गाः—गाएँ; शुचिः—शुद्ध होकर।

माता यशोदा ने आगे भी कृष्ण से कहा : हे पुत्र, दिन-भर खेलते रहने से तुम्हारा सारा शरीर धूल तथा रेत से भर गया है। अतः वापस आ जाओ, स्नान करो और अपनी सफाई करो। आज तुम्हारे जन्म के शुभ नक्षत्र से चाँद मेल खा रहा है, अतः शुद्ध होकर ब्राह्मणों को गौवों का दान करो।

तात्पर्य : वैदिक संस्कृति की यह एक प्रथा है कि जब भी कोई शुभ उत्सव होता है, तो ब्राह्मणों को दान में बहुमूल्य गौवें दी जाती हैं। इसलिए माता यशोदा ने कृष्ण से प्रार्थना की कि खेलने में अधिक मन न लगा कर अब घर आकर दान देने में मन लगायें। *यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्*। जैसाकि *भगवद्गीता* (१८.५) में सलाह दी गई है यज्ञ, दान तथा तपस्या का कभी भी परित्याग नहीं करना चाहिए। *यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्*—आध्यात्मिक जीवन में अत्यधिक बढ़े-चढ़े व्यक्ति को भी ये तीन कर्म नहीं छोड़ने चाहिए। अपना जन्मोत्सव मनाने के लिए इन तीनों (यज्ञ, दान या तप) में से एक या तीनों करना चाहिए।

पश्य पश्य वयस्यांस्ते मातृमृष्टान्स्वलङ्कितान् ।

त्वं च स्नातः कृताहारो विहरस्व स्वलङ्कितः ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

पश्य पश्य—जरा देखो तो; वयस्यान्—समान उम्र के बालक; ते—तुम्हारी; मातृ-मृष्टान्—अपनी माताओं द्वारा नहलाये-धुलाये गये; सु-अलङ्कितान्—सुन्दर आभूषणों से सज्जित; त्वम् च—तुम भी; स्नातः—नहाकर; कृत-आहारः—तथा भोजन करने के बाद; विहरस्व—उनके साथ खेलो-कूदो; सु-अलङ्कितः—अच्छी तरह सजधज कर।

जरा अपनी उम्र वाले अपने सारे साथियों को तो देखो कि वे किस तरह अपनी माताओं द्वारा नहलाये-धुलाये तथा सुन्दर आभूषणों से सजाये गये हैं। तुम यहाँ आओ और स्नान करने, भोजन खाने तथा आभूषणों से अलंकृत होने के बाद फिर अपने सखाओं के साथ खेल सकते हो।

तात्पर्य : सामान्यतया बालकों में स्पर्धा होती है। यदि एक मित्र कुछ कर लेता है, तो दूसरा भी कुछ करना चाहता है। इसलिए माता यशोदा ने कृष्ण से कहा कि तुम्हारे साथी सजेधजे हैं जिससे वे भी अपने को उन्हीं की तरह सजा सकें।

इत्थं यशोदा तमशेषशेखरं

मत्वा सुतं स्नेहनिबद्धधीर्नृप ।
हस्ते गृहीत्वा सहराममच्युतं
नीत्वा स्ववाटं कृतवत्यथोदयम् ॥ २० ॥

शब्दार्थ

इत्थम्—इस तरह; यशोदा—यशोदा; तम् अशेष-शेखरम्—कृष्ण को, जो हर शुभ वस्तु की पराकाष्ठा थे, जिनमें गंदगी या अशुद्धता का प्रश्न ही नहीं था; मत्वा—मान कर; सुतम्—अपने पुत्र; स्नेह-निबद्ध-धीः—अत्यधिक प्रेम-भाव के कारण; नृप—हे राजा (महाराज परीक्षित); हस्ते—हाथ में; गृहीत्वा—लेकर; सह-रामम्—बलराम समेत; अच्युतम्—कृष्ण को; नीत्वा—लाकर; स्व-वाटम्—अपने घर; कृतवती—किया; अथ—अब; उदयम्—नहलाने-धुलाने, वस्त्र पहनाने और आभूषणों से अलंकृत करने के बाद की चमक ।

हे महाराज परीक्षित, अत्यधिक प्रेमवश माता यशोदा ने समस्त ऐश्वर्यों के शिखर पर आसीन कृष्ण को अपना पुत्र माना। इस तरह वे बलराम के साथ कृष्ण को हाथ से पकड़ कर घर ले आईं जहाँ उन्हें नहलाने-धुलाने, वस्त्र पहनाने तथा भोजन खिलाने का उन्होंने अपना काम पूरा किया।

तात्पर्य : कृष्ण सदैव स्वच्छ तथा ऐश्वर्यवान हैं। उन्हें नहाने-धोने, सजने-धजने की कोई आवश्यकता नहीं है फिर भी माता यशोदा ने स्नेहवश उन्हें सामान्य बालक समझा और अपने पुत्र को साफ-सुथरा और चमकीला रखने का अपना काम पूरा किया।

श्रीशुक उवाच

गोपवृद्धा महोत्पाताननुभूय बृहद्वने ।
नन्दादयः समागम्य ब्रजकार्यममन्त्रयन् ॥ २१ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; गोप-वृद्धाः—बूढ़े ग्वालों ने; महा-उत्पातान्—बड़े बड़े उपद्रव; अनुभूय—अनुभव करके; बृहद्वने—बृहद्वन नामक स्थान में; नन्द-आदयः—नन्द महाराज तथा अन्य ग्वाले; समागम्य—एकत्र हुए; ब्रज-कार्यम्—ब्रजभूमि का कार्य; अमन्त्रयन्—महावन में लगातार होने वाले उत्पातों को रोकने पर विचार-विमर्श किया।

श्रीशुकदेव गोस्वामी ने आगे कहा : तब एक बार बृहद्वन में बड़े बड़े उपद्रव देख कर नन्द महाराज तथा वृद्ध ग्वाले एकत्र हुए और विचार करने लगे कि ब्रज में लगातार होने वाले उपद्रवों को रोकने के लिए क्या किया जाय।

तत्रोपानन्दनामाह गोपो ज्ञानवयोऽधिकः ।
देशकालार्थतत्त्वज्ञः प्रियकृद्रामकृष्णयोः ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

तत्र—उस सभा में; उपनन्द-नामा—उपानन्द नामक (नन्द महाराज का बड़ा भाई) ने; आह—कहा; गोपः—ग्वाला; ज्ञान-वयः-अधिकः—जो ज्ञान तथा आयु में सबसे बड़ा था; देश-काल-अर्थ-तत्त्व-ज्ञः—देश, काल तथा परिस्थितियों के अनुसार अत्यन्त अनुभवी; प्रिय-कृत्—लाभ के लिए; राम-कृष्णयोः—भगवान् बलराम तथा भगवान् कृष्ण के ।

गोकुलवासियों की इस सभा में, उपानन्द नामक एक ग्वाले ने, जो आयु तथा ज्ञान में सर्वाधिक प्रौढ़ था और देश, काल तथा परिस्थिति के अनुसार अत्यधिक अनुभवी था, राम तथा कृष्ण के लाभ हेतु यह प्रस्ताव रखा ।

उत्थातव्यमितोऽस्माभिर्गोकुलस्य हितैषिभिः ।

आयान्त्यत्र महोत्पाता बालानां नाशहेतवः ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

उत्थातव्यम्—इस स्थान को छोड़ देना चाहिए; इतः—यहाँ (गोकुल) से; अस्माभिः—हम सबों के द्वारा; गोकुलस्य—गोकुल के; हित-एषिभिः—इस स्थान के हितैषियों द्वारा; आयान्ति—हो रहे हैं; अत्र—यहाँ पर; महा-उत्पाताः—अनेक बड़े बड़े उपद्रव; बालानाम्—राम तथा कृष्ण जैसे बालकों के; नाश-हेतवः—विनष्ट करने के उद्देश्य से ।

उसने कहा : मेरे ग्वालमित्रो, इस गोकुल नामक स्थान की भलाई के लिए हमें इसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि यहाँ पर राम तथा कृष्ण को मारने के उद्देश्य से सदैव अनेकानेक उपद्रव होते ही रहते हैं ।

मुक्तः कथञ्चिद्राक्षस्या बालघ्न्या बालको ह्यसौ ।

हरेरनुग्रहान्नूनमनश्चोपरि नापतत् ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

मुक्तः—छूटा था; कथञ्चित्—किसी तरह; राक्षस्याः—राक्षसी पूतना के हाथों से; बाल-घ्न्याः—बालकों को मारने पर तुली; बालकः—विशेषतया बालक कृष्ण; हि—क्योंकि; असौ—वह; हरेः अनुग्रहात्—भगवान् की दया से; नूनम्—निस्सन्देह; अनः च—तथा छकड़ा; उपरि—बालक के ऊपर; न—नहीं; अपतत्—गिरा ।

यह बालक कृष्ण, एकमात्र भगवान् की दया से किसी न किसी तरह राक्षसी पूतना के हाथों से बच सका क्योंकि वह उन्हें मारने पर उतारू थी । फिर यह भगवान् की कृपा ही थी कि वह छकड़ा इस बालक पर नहीं गिरा ।

चक्रवातेन नीतोऽयं दैत्येन विपदं वियत् ।

शिलायां पतितस्तत्र परित्रातः सुरेश्वरैः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

चक्र-वातेन—बवंडर के रूप में असुर (तुणावर्त) द्वारा; नीतः अयम्—यह कृष्ण उड़ा ले जाया गया; दैत्येन—असुर द्वारा; विपदम्—भयानक; वियत्—आकाश में; शिलायाम्—पत्थर पर; पतितः—गिरा हुआ; तत्र—वहाँ; परित्रातः—बचा लिया गया; सुर-ईश्वरैः—भगवान् विष्णु या उनके संगियों द्वारा ।

इसके बाद बवंडर के रूप में आया तृणावर्त असुर इस बालक को मार डालने के लिए संकटमय आकाश में ले गया किन्तु वह असुर पत्थर की एक शिला पर गिर पड़ा। तब भी भगवान् विष्णु या उनके संगियों की कृपा से यह बालक बच गया था।

यन्न म्रियेत द्रुमयोरन्तरं प्राप्य बालकः ।

असावन्यतमो वापि तदप्यच्युतरक्षणम् ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

यत्—पुनः; न म्रियेत—नहीं मरा; द्रुमयोः अन्तरम्—दो वृक्षों के बीच; प्राप्य—बीच में होते हुए; बालकः असौ—वह बालक, कृष्ण; अन्यतमः—दूसरा बालक; वा अपि—अथवा; तत् अपि अच्युत-रक्षणम्—तब भी भगवान् द्वारा बचा लिया गया।

यहाँ तक कि किसी और दिन, न तो कृष्ण न ही उनके खिलाड़ी साथी उन दोनों वृक्षों के गिरने से मरे यद्यपि ये बालक वृक्षों के निकट या उनके बीच ही में थे। इसे भी भगवान् का अनुग्रह मानना चाहिये।

यावदौत्पातिकोऽरिष्टो व्रजं नाभिभवेदितः ।

तावद्बालानुपादाय यास्यामोऽन्यत्र सानुगाः ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

यावत्—जब तक; औत्पातिकः—उत्पात मचाने वाले; अरिष्टः—असुर; व्रजम्—यह गोकुल व्रजभूमि; न—नहीं; अभिभवेत् इतः—इस स्थान से चले जाँय; तावत्—तब तक; बालान् उपादाय—बालकों के लाभ के लिए; यास्यामः—हम चले जाँय; अन्यत्र—किसी दूसरी जगह; स-अनुगाः—अपने अनुयायियों समेत।

ये सारे उत्पात कुछ अज्ञात असुर द्वारा किये जा रहे हैं। इसके पूर्व कि वह दूसरा उत्पात करने आये, हमारा कर्तव्य है कि हम तब तक के लिए इन बालकों समेत कहीं और चले जायँ जब तक कि ये उत्पात बन्द न हो जायँ।

तात्पर्य : उपानन्द ने प्रस्ताव रखा, “ भगवान् विष्णु की कृपा से कृष्ण अनेकानेक घातक घटनाओं से सदा बचता रहा है। अब हमको चाहिए कि किसी और आक्रमणकारी असुर से मृत्यु का कारण उत्पन्न होने से पहले, हम इस स्थान को छोड़ कर किसी दूसरे स्थान चले जाँय जहाँ हम अविचलित रह कर विष्णु की पूजा कर सकें।” भक्त की यही अभिलाषा रहती है कि वह अविचल-भाव से भक्ति करता रहे। किन्तु हम देखते हैं कि नन्द महाराज तथा अन्य ग्वालों के बीच भगवान् कृष्ण के होते हुए भी उत्पात हो रहे थे। हाँ, यह दूसरी बात है कि हर बार कृष्ण विजयी होते रहे। इससे हमें यही शिक्षा मिलती है कि तथाकथित उत्पातों से हमें विचलित नहीं होना चाहिए। हमारे कृष्णभावनामृत आन्दोलन

के साथ अनेक उत्पात होते रहे हैं किन्तु हम अपना आगे बढ़ना नहीं छोड़ सकते। उल्टे, संसार-भर में लोग इस आन्दोलन का बड़े उत्साह से स्वागत कर रहे हैं और दूने उत्साह से कृष्णभावनामृत विषयक साहित्य खरीद रहे हैं। इस तरह प्रोत्साहन तथा उत्पात दोनों रहते हैं। कृष्ण के समय में भी ऐसा ही था।

वनं वृन्दावनं नाम पशव्यं नवकाननम् ।

गोपगोपीगवां सेव्यं पुण्याद्रितृणवीरुधम् ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

वनम्—दूसरा वन; वृन्दावनम् नाम—वृन्दावन नामक; पशव्यम्—गौवों तथा अन्य पशुओं के पालन के लिए उपयुक्त स्थान; नव-काननम्—कई नये बगीचों जैसे स्थान हैं; गोप-गोपी-गवाम्—सारे ग्वालों, उनके परिवार वालों तथा गौवों के लिए; सेव्यम्—अत्यन्त उपयुक्त स्थान; पुण्य-अद्रि—सुन्दर पर्वत हैं; तृण—पौधे; वीरुधम्—तथा लताएँ।

नन्देश्वर तथा महावन के मध्य वृन्दावन नामक एक स्थान है। यह स्थान अत्यन्त उपयुक्त है क्योंकि इसमें गौवों तथा अन्य पशुओं के लिए रसीली घास, पौधे तथा लताएँ हैं। वहाँ सुन्दर बगीचे तथा ऊँचे पर्वत हैं और वह स्थान गोपों, गोपियों तथा हमारे पशुओं के सुख के लिए सारी सुविधाओं से युक्त है।

तात्पर्य : वृन्दावन वह स्थान है, जो नन्देश्वर तथा महावन के बीच में है। पहले ग्वाले महावन चले गये थे फिर भी उत्पात होते रहते थे। अतः ग्वालों ने वृन्दावन को चुना जो दो गाँवों के बीच है और वहीं जाने का निश्चय किया।

तत्तत्राद्यैव यास्यामः शकटान्युद्धं मा चिरम् ।

गोधनान्यग्रतो यान्तु भवतां यदि रोचते ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

तत्—इसलिए; तत्र—वहाँ; अद्य एव—आज ही; यास्यामः—चले चलें; शकटान्—सारी बैलगाड़ियों को; युद्धं—जोत कर; मा चिरम्—देरी लगाये बिना; गो-धनानि—सारी गौवों को; अग्रतः—आगे आगे; यान्तु—चलने दें; भवताम्—आप सबों को; यदि—यदि; रोचते—अच्छा लगे।

अतएव हम आज ही तुरन्त चल दें। अब और अधिक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। यदि आप सबों को मेरा प्रस्ताव मान्य हो तो हम अपनी सारी बैलगाड़ियाँ तैयार कर लें और गौवों को आगे करके वहाँ चले जायें।

तच्छ्रुत्वैकधियो गोपाः साधु साध्विति वादिनः ।

व्रजान्स्वान्स्वान्समायुज्य ययू रूढपरिच्छदाः ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

तत् श्रुत्वा—उपानन्द की यह सलाह सुन कर; एक-धियः—एकमत होकर; गोपाः—सारे ग्वालों ने; साधु साधु—अति उत्तम, अति उत्तम; इति—इस प्रकार; वादिनः—घोषित करते हुए; व्रजान्—गौवों को; स्वान् स्वान्—अपनी अपनी; समायुज्य—एकत्र करके; ययुः—रवाना हो गये; रूढ-परिच्छदाः—सारा साज-सामान गाड़ियों में रख कर।

उपानन्द की यह सलाह सुन कर ग्वालों ने इसे एकमत से स्वीकार कर लिया और कहा, “बहुत अच्छा, बहुत अच्छा।” इस तरह उन्होंने अपने घरेलू मामलों की छान-बीन की और अपने वस्त्र तथा अन्य सामान गाड़ियों पर रख लिये और तुरन्त वृन्दावन के लिए प्रस्थान कर दिया।

वृद्धान्बालान्स्त्रियो राजन्सर्वोपकरणानि च ।

अनःस्वारोष्य गोपाला यत्ता आत्तशरासनाः ॥ ३१ ॥

गोधनानि पुरस्कृत्य शृङ्गाण्यापूर्य सर्वतः ।

तूर्यघोषेण महता ययुः सहपुरोहिताः ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

वृद्धान्—सर्वप्रथम सारे बूढ़ों को; बालान्—बालकों को; स्त्रियः—स्त्रियों को; राजन्—हे राजा परीक्षित; सर्व-उपकरणानि च—तथा सारी आवश्यक एवं घरेलू वस्तुएँ; अनःसु—बैलगाड़ियों पर; आरोष्य—लाद कर; गोपालाः—सारे ग्वाले; यत्ताः—सावधानीपूर्वक; आत्त-शर-असनाः—तीरों तथा धनुषों से लैस होकर; गो-धनानि—सारी गौवों को; पुरस्कृत्य—आगे रख कर; शृङ्गाणि—सींग की बनी तुरही; आपूर्य—बजाकर; सर्वतः—चारों ओर; तूर्य-घोषेण—तुरही की ध्वनि से; महता—उच्च; ययुः—रवाना हो गये; सह-पुरोहिताः—पुरोहितों सहित।

सारे बूढ़ों, स्त्रियों, बालकों तथा घरेलू सामग्री को बैलगाड़ियों में लाद कर एवं सारी गौवों को आगे करके, ग्वालों ने सावधानी से अपने अपने तीर-कमान ले लिये और सींग के बने बिगुल बजाये। हे राजा परीक्षित, इस तरह चारों ओर बिगुल बज रहे थे तभी ग्वालों ने अपने पुरोहितों सहित अपनी यात्रा के लिए प्रस्थान किया।

तात्पर्य : इस सम्बन्ध में यह ध्यान देने की बात है कि यद्यपि गोकुल के वासी अधिकांशतः ग्वाले तथा कृषक थे किन्तु वे संकट से अपनी रक्षा करना तथा स्त्रियों, वृद्धों, बालकों एवं ब्राह्मण पुरोहितों को संरक्षण प्रदान करना जानते थे।

गोप्यो रूढरथा नूलकुचकुङ्कु मकान्तयः ।

कृष्णालीला जगुः प्रीत्या निष्ककण्ठ्यः सुवाससः ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

गोप्यः—सारी गोपियाँ; रूढ-रथाः—बैलगाड़ियों पर चढ़ी हुई; नूल-कुच-कुङ्कुम-कान्तयः—उनके शरीर, विशेषतया उनके स्तन ताजे कुंकुम से सजाये गये; कृष्ण-लीलाः—कृष्ण-लीलाएँ; जगुः—उच्चारण कर रही थीं; प्रीत्या—बड़े हर्ष से; निष्क-कण्ठः—अपने गलों में लाकेट पहने; सु-वाससः—अच्छे वस्त्रों से सज्जित।

बैलगाड़ियों में चढ़ी हुई गोपियाँ उत्तम से उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित थीं और उनके शरीर, विशेषतया स्तन ताजे कुंकुम-चूर्ण से अलंकृत थे। बैलगाड़ियों पर चढ़ते समय वे अत्यन्त हर्षपूर्वक कृष्ण की लीलाओं का कीर्तन करने लगीं।

तथा यशोदारोहिण्यावेकं शकटमास्थिते ।

रेजतुः कृष्णारामाभ्यां तत्कथाश्रवणोत्सुके ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

तथा—और; यशोदा-रोहिण्यौ—यशोदा तथा रोहिणी दोनों; एकम् शकटम्—एक बैलगाड़ी पर; आस्थिते—बैठी; रेजतुः—अत्यन्त सुन्दर; कृष्ण-रामाभ्याम्—अपनी माताओं के साथ कृष्ण तथा बलराम; तत्-कथा—कृष्ण तथा बलराम की लीलाओं का; श्रवण-उत्सुके—बड़ी ही उत्सुकता से सुनते हुए।

इस तरह माता यशोदा तथा रोहिणीदेवी कृष्ण तथा बलराम की लीलाओं को बड़े हर्ष से सुनती हुई, जिससे वे क्षण-भर के लिए भी उनसे वियुक्त न हों, एक बैलगाड़ी में उन दोनों के साथ चढ़ गईं। इस दशा में वे सभी अत्यन्त सुन्दर लग रहे थे।

तात्पर्य : ऐसा लगता है कि माता यशोदा तथा रोहिणी क्षण-भर भी कृष्ण तथा बलराम से विलग नहीं की जा सकती थीं। वे या तो कृष्ण तथा बलराम के पालन-पोषण में अथवा उनकी लीलाओं का कीर्तन करने में अपना समय बिताती थीं। इस तरह माता यशोदा तथा रोहिणी अत्यन्त सुन्दर दिखती थीं।

वृन्दावनं सम्प्रविश्य सर्वकालसुखावहम् ।

तत्र चक्रुर्ब्रजावासं शकटैरर्धचन्द्रवत् ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

वृन्दावनम्—वृन्दावन नामक पवित्र स्थान में; सम्प्रविश्य—प्रविष्ट होकर; सर्व-काल-सुख-आवहम्—जहाँ सभी ऋतुओं में रहना सुहावना लगता है; तत्र—वहाँ; चक्रुः—बनाया; ब्रज-आवासम्—ब्रज का निवास; शकटैः—बैलगाड़ियों से; अर्ध-चन्द्रवत्—आधे चन्द्रमा जैसा अर्धवृत्त बनाकर।

इस तरह वे वृन्दावन में प्रविष्ट हुए जहाँ सभी ऋतुओं में रहना सुहावना लगता है। उन्होंने अपनी बैलगाड़ियों से अर्धचन्द्राकार अर्धवृत्त बनाकर अपने रहने के लिए अस्थायी निवास बना लिया।

तात्पर्य : विष्णु पुराण में कहा गया है—

शकटीवाटपर्यन्तश्चन्द्रार्धकार संस्थिते

और हरिवंश में कहा गया है—

कण्टकीभिः प्रवृद्धाभिस्तथा कण्टकीभिर्दुर्मै ।

निखातोच्छ्रितशाखाभिरभिगुप्तं समन्ततः ॥

चारों ओर बाड़ा बनाने की आवश्यकता न थी। एक ओर पहले से ही कँटीले वृक्ष थे। इस तरह कँटीले वृक्ष, बैलगाड़ियाँ तथा पशुओं से उनके अस्थायी निवास घिर गये।

वृन्दावनं गोवर्धनं यमुनापुलिनानि च ।

वीक्ष्यासीदुत्तमा प्रीती राममाधवयोर्नृप ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

वृन्दावनम्—वृन्दावन नामक स्थान; गोवर्धनम्—गोवर्धन पर्वत; यमुना-पुलिनानि च—तथा यमुना नदी के किनारे; वीक्ष्य—देखकर; आसीत्—हो उठे; उत्तमा प्रीती—उच्च कोटि का हर्ष; राम-माधवयोः—कृष्ण तथा बलराम का; नृप—हे राजा परीक्षित।

हे राजा परीक्षित, जब राम तथा कृष्ण ने वृन्दावन, गोवर्धन तथा यमुना नदी के तट देखे तो दोनों को बड़ा आनन्द आया।

एवं ब्रजौकसां प्रीतिं यच्छन्तौ बालचेष्टितैः ।

कलवाक्यैः स्वकालेन वत्सपालौ बभूवतुः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; ब्रज-ओकसाम्—सारे ब्रजवासियों को; प्रीतिम्—हर्ष; यच्छन्तौ—प्रदान करते हुए; बाल-चेष्टितैः—बाल-लीलाओं से; कल-वाक्यैः—मीठी तोतली बोली से; स्व-कालेन—समयानुसार; वत्स-पालौ—बछड़ों की रखवाली करने के लिए; बभूवतुः—बड़े हो गये।

इस तरह कृष्ण और बलराम छोटे बालकों की तरह क्रीड़ाएँ करते तथा तोतली बोली बोलते हुए ब्रज के सारे निवासियों को दिव्य आनन्द देने लगे। समय आने पर वे बछड़ों की देखभाल करने के योग्य हो गये।

तात्पर्य : ज्योंही कृष्ण तथा बलराम कुछ बड़े हुए त्योंही उन्हें बछड़ों की रखवाली का काम सौंप दिया गया। यद्यपि वे समृद्ध परिवार में उत्पन्न हुए थे तो भी उन्हें बछड़ों की रखवाली करनी पड़ती थी। यह शिक्षा की पद्धति थी। जो ब्राह्मण परिवारों में जन्म नहीं लेते थे उन्हें उच्च शिक्षा नहीं दी जाती थी। ब्राह्मणों को साहित्यिक उच्च शिक्षा दी जाती थी; क्षत्रियों को राज्य की रक्षा करने का प्रशिक्षण मिलता

था और वैश्यों को खेती करने तथा गौवों-बछड़ों की रखवाली करना सिखलाया जाता था। उन्हें झूठी शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्कूल जाने और समय बर्बाद करने की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि इससे बाद में बेरोजगारी ही बढ़ती। कृष्ण तथा बलराम ने अपने निजी आचरण से हमें शिक्षा दी। कृष्ण गायों की रखवाली करते और अपनी बाँसुरी बजाते तथा बलराम अपने हाथ में हल लेकर कृषि कार्यों की देखरेख करते।

अविदूरे ब्रजभुवः सह गोपालदारकैः ।

चारयामासतुर्वत्सानानाक्रीडापरिच्छदौ ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

अविदूरे—ब्रजवासियों के आवासीय घरों से अधिक दूर नहीं; ब्रज-भुवः—ब्रजभूमि से; सह गोपाल-दारकैः—उसी व्यवसाय वाले अन्य बालकों (ग्वालों) के साथ; चारयाम् आसतुः—चराया करते; वत्सान्—बछड़ों को; नाना—तरह तरह के; क्रीडा—खेल; परिच्छदौ—भाँति-भाँति की सुन्दर वेशभूषाओं से युक्त तथा औजारों से लैस।

कृष्ण तथा बलराम अपने मकान के पास ही सभी तरह के खिलौनों से युक्त होकर अन्य ग्वालों के साथ खेलने लगे एवं छोटे-छोटे बछड़ों को चराने लगे।

क्वचिद्वादयतो वेणुं क्षेपणैः क्षिपतः क्वचित् ।

क्वचित्पादैः किङ्किणीभिः क्वचित्कृत्रिमगोवृषैः ॥ ३९ ॥

वृषायमाणौ नर्दन्तौ युयुधाते परस्परम् ।

अनुकृत्य रुतैर्जन्तूश्चेरतुः प्राकृतौ यथा ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

क्वचित्—कभी; वादयतः—बजाते हुए; वेणुम्—बाँसुरी को; क्षेपणैः—फेंकने की रस्सी (गुलेल) से; क्षिपतः—फल पाने के लिए पत्थर फेंकते; क्वचित्—कभी; क्वचित् पादैः—कभी पाँवों से; किङ्किणीभिः—पैजनियों की आवाज से; क्वचित्—कभी; कृत्रिम-गो-वृषैः—नकली गाय तथा बैल बन कर; वृषायमाणौ—पशुओं की नकल उतारते; नर्दन्तौ—नादते, जोर से शब्द करते; युयुधाते—लड़ने लगते; परस्परम्—एक-दूसरे से; अनुकृत्य—नकल करके; रुतैः—आवाज निकालते हुए; जन्तून्—सारे पशुओं की; चेरतुः—घूमा करते; प्राकृतौ—दो सामान्य बालकों; यथा—की तरह।

कृष्ण और बलराम कभी अपनी बाँसुरी बजाते, कभी वृक्षों से फल गिराने के लिए गुलेल चलाते, कभी केवल पत्थर फेंकते और कभी पाँवों के घुँघरुओं के बजते रहने के साथ साथ, वे बैल तथा आमलकी जैसे फलों से फुटबाल खेलते। कभी कभी वे अपने ऊपर कम्बल डाल कर गौवों तथा बैलों की नकल उतारते और जोर-जोर से शब्द करते हुए एक-दूसरे से लड़ते। कभी वे पशुओं की बोलियों की नकल करते। इस तरह वे दोनों सामान्य मानवी बालकों की तरह खेल का आनन्द लेते।

तात्पर्य : वृन्दावन मोरों से भरा हुआ है। कूजत्-कोकिल-हंस-सारस-गणाकीर्ण मयूराकुले। वृन्दावन का जंगल कोयलों, बत्तखों, हंसों, सारसों, मोरों तथा बन्दरों, बैलों और गौवों से भरा-पुरा था। अतः कृष्ण तथा बलराम इन पशुओं की बोली की नकल उतारते तथा खेल का आनन्द लेते।

कदाचिद्यमुनातीरे वत्सांश्चारयतोः स्वकैः ।

वयस्यैः कृष्णबलयोर्जिघांसुर्दैन्य आगमत् ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ

कदाचित्—कभी; यमुना-तीरे—यमुना के तट पर; वत्सान्—बछड़ों को; चारयतोः—चराते हुए; स्वकैः—अपने; वयस्यैः—अन्य साथियों के साथ; कृष्ण-बलयोः—कृष्ण तथा बलराम दोनों को; जिघांसुः—मारने की इच्छा से; दैन्यः—अन्य असुर; आगमत्—आ पहुँचा।

एक दिन जब राम तथा कृष्ण अपने साथियों के साथ यमुना नदी के किनारे अपने बछड़े चरा रहे थे तो उन्हें मारने की इच्छा से वहाँ एक अन्य असुर आया।

तं वत्सरूपिणं वीक्ष्य वत्सयूथगतं हरिः ।

दर्शयन्बलदेवाय शनैर्मुग्ध इवासदत् ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ

तम्—असुर को; वत्स-रूपिणम्—बछड़े का वेश धारण किये; वीक्ष्य—देख कर; वत्स-यूथ-गतम्—जब वह असुर अन्य बछड़ों के समूह के बीच घुसा; हरिः—भगवान् कृष्ण; दर्शयन्—सूचित करते हुए; बलदेवाय—बलदेव को; शनैः—अत्यन्त धीमे धीमे; मुग्धः इव—मानो कुछ समझ ही न रहे हों; आसदत्—पास आये।

जब भगवान् ने देखा कि असुर बछड़े का वेश धारण करके अन्य बछड़ों के समूह के बीच घुस आया है, तो उन्होंने बलदेव को इङ्गित किया, “यह रहा दूसरा असुर।” फिर वे उस असुर के पास धीरे-धीरे पहुँच गये मानो वे असुर के मनोभावों को समझ नहीं रहे थे।

तात्पर्य : मुग्ध इव शब्दों का आशय यह है कि यद्यपि कृष्ण सब जानते हैं किन्तु यहाँ वे ऐसा बन रहे थे जैसे वे यह नहीं जानते कि असुर बछड़ों के बीच में क्यों घुस आया है, अतः उन्होंने बलदेव को संकेत से बताया।

गृहीत्वापरपादाभ्यां सहलाङ्गुलमच्युतः ।

भ्रामयित्वा कपित्थाग्रे प्राहिणोद्गतजीवितम् ।

स कपित्थैर्महाकायः पात्यमानैः पपात ह ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ

गृहीत्वा—पकड़ कर; अपर-पादाभ्याम्—पिछले पाँव से; सह—साथ; लाङ्गुलम्—पूँछ को; अच्युतः—भगवान् कृष्ण ने; भ्रामयित्वा—तेजी से घुमाकर; कपित्थ-अग्रे—कैथे के पेड़ की चोटी पर; प्राहिणोत्—फेंक दिया; गत-जीवितम्—प्राणहीन

शरीर; सः—वह असुर; कपित्थैः—कैथे के वृक्ष समेत; महा-कायः—विशाल शरीर धारण किये; पात्यमानैः—गिरता हुआ वृक्ष; पपात ह—मृत होकर भूमि पर गिर पड़ा।

तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने उस असुर की पिछली टाँगें तथा पूँछ पकड़ ली और वे उसके शरीर को तब तक तेजी से घुमाते रहे जब तक वह मर नहीं गया। फिर उसे कैथे के पेड़ की चोटी पर फेंक दिया। वह वृक्ष उस असुर द्वारा धारण किये गये विशाल शरीर को लेकर भूमि पर गिर पड़ा।

तात्पर्य : कृष्ण ने असुर को इस तरह मारा कि उससे कैथे के फल नीचे गिरें जिन्हें बलराम, वे तथा अन्य बालक उस अवसर का लाभ उठाकर, खा सकें। कपित्थ को कभी कभी क्षतबेलफल भी कहा जाता है। इसका गूदा बहुत स्वादिष्ट होता है—मीठा तथा खट्टा अतः इसे हर कोई पसंद करता है।

तं वीक्ष्य विस्मिता बालाः शशंसुः साधु साध्विति ।

देवाश्च परिसन्तुष्टा बभूवुः पुष्पवर्षिणः ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ

तम्—इस घटना को; वीक्ष्य—देखकर; विस्मिताः—चकित; बालाः—सारे बालक; शशंसुः—खूब प्रशंसा की; साधु साधु इति—“बहुत अच्छा बहुत अच्छा” चिल्लाते हुए; देवाः च—तथा स्वर्गलोक से सारे देवता; परिसन्तुष्टाः—अत्यन्त संतुष्ट; बभूवुः—हो गये; पुष्प-वर्षिणः—कृष्ण पर फूलों की वर्षा की।

असुर के मृत शरीर को देखकर सारे ग्वालबाल चिल्ला उठे, “बहुत खूब कृष्ण, बहुत अच्छे, बहुत अच्छे, धन्यवाद,” स्वर्गलोक में सारे देवता प्रसन्न थे अतः उन्होंने भगवान् पर फूल बरसाये।

तौ वत्सपालकौ भूत्वा सर्वलोकैकपालकौ ।

सप्रातराशौ गोवत्सांश्चारयन्तौ विचेरतुः ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ

तौ—कृष्ण तथा बलराम; वत्स-पालकौ—मानो बछड़ों की रखवाली करने वाले; भूत्वा—बन कर; सर्व-लोक-एक-पालकौ—यद्यपि वे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के जीवों के पालनकर्ता हैं; स-प्रातः-आशौ—सुबह का नाश्ता करके; गो-वत्सान्—सारे बछड़ों को; चारयन्तौ—चराते हुए; विचेरतुः—इधर-उधर विचरण करने लगे।

असुर को मारने के बाद कृष्ण तथा बलराम ने अपना सुबह का नाश्ता (कलेवा) किया और बछड़ों की रखवाली करते हुए वे इधर-उधर टहलते रहे। भगवान् कृष्ण तथा बलराम ने जो सम्पूर्ण सृष्टि के पालक हैं, ग्वालबालों की तरह बछड़ों का भार सँभाला।

तात्पर्य : परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। इस भौतिक जगत में कृष्ण का नित्य कार्य था दुष्कृतियों को मारना। इससे उनके दैनिक कार्य में बाधा नहीं आती थी क्योंकि यह नित्य कर्म था। जब

वे यमुना के तट पर बछड़े चराते तो नित्य ही दो-तीन घटनाएँ घटतीं किन्तु गम्भीर होने पर भी असुरों का वध उनका नित्य का कार्य बन गया था।

स्वं स्वं वत्सकुलं सर्वे पाययिष्यन्त एकदा ।

गत्वा जलाशयाभ्याशं पाययित्वा पपुर्जलम् ॥ ४६ ॥

शब्दार्थ

स्वम् स्वम्—अपने अपने; वत्स-कुलम्—बछड़ों के समूह को; सर्वे—सारे लड़के तथा कृष्ण एवं बलराम; पाययिष्यन्तः—पानी पिलाने की इच्छा से; एकदा—एक दिन; गत्वा—जाकर; जल-आशय-अभ्याशम्—तालाब के निकट; पाययित्वा—पशुओं को पानी पिला कर; पपुः जलम्—स्वयं भी जल पिया।

एक दिन कृष्ण तथा बलराम समेत सारे बालक, अपने अपने बछड़ों का समूह लेकर, जलाशय के पास बछड़ों को पानी पिलाने लाये। जब पशु जल पी चुके तो बालकों ने भी वहाँ पानी पिया।

ते तत्र ददृशुर्बाला महासत्त्वमवस्थितम् ।

तत्रसुर्वज्रनिभिन्नं गिरेः शृङ्गमिव च्युतम् ॥ ४७ ॥

शब्दार्थ

ते—उन; तत्र—वहाँ; ददृशुः—देखा; बालाः—बालकों ने; महा-सत्त्वम्—विशाल शरीर; अवस्थितम्—स्थित; तत्रसुः—डर गये; वज्र-निभिन्नम्—वज्र से टूटा; गिरेः शृङ्गम्—पर्वत की चोटी; इव—सदृश; च्युतम्—वहाँ पर गिरी हुई।

जलाशय के पास ही बालकों ने एक विराट शरीर देखा जो उस पर्वत की चोटी के समान था, जो वज्र के द्वारा टूट पड़ी हो। वे ऐसे विशाल जीव को देखकर ही भयभीत थे।

स वै बको नाम महानसुरो बकरूपधृक् ।

आगत्य सहसा कृष्णं तीक्ष्णतुण्डोऽग्रसद्वली ॥ ४८ ॥

शब्दार्थ

सः—वह प्राणी; वै—निस्सन्देह; बकः नाम—बकासुर नामक; महान् असुरः—विशाल असुर; बक-रूप-धृक्—बगुले का शरीर धारण करके; आगत्य—वहाँ आकर; सहसा—अचानक; कृष्णम्—कृष्ण को; तीक्ष्ण-तुण्डः—तेज चोंच वाला; अग्रसत्—निगल गया; बली—अत्यन्त बलशाली।

वह विशालकाय असुर बकासुर था। उसने अत्यन्त तेज चोंच वाले बगुले का शरीर धारण कर लिया था। वहाँ आकर उसने तुरन्त ही कृष्ण को निगल लिया।

कृष्णं महाबकग्रस्तं दृष्ट्वा रामादयोऽर्भकाः ।

बभूवुरिन्द्रियाणीव विना प्राणं विचेतसः ॥ ४९ ॥

शब्दार्थ

कृष्णम्—कृष्ण को; महा-बक-ग्रस्तम्—विशाल बगुले द्वारा निगला हुआ; दृष्ट्वा—देखकर; राम-आदयः अर्भकाः—बलराम इत्यादि सारे बालक; बभूवुः—हो गए; इन्द्रियाणि—इन्द्रियाँ; इव—सदृश; विना—रहित; प्राणम्—प्राण; विचेतसः—अत्यधिक मोहग्रस्त, प्रायः अचेत।

जब बलराम तथा अन्य बालकों ने देखा कि कृष्ण विशाल बगुले द्वारा निगले जा चुके हैं, तो वे बेहोश जैसे हो गये मानों प्राणरहित इन्द्रियाँ हों।

तात्पर्य : यद्यपि बलराम सब कुछ कर सकते हैं किन्तु अपने भाई के लिए उत्कट स्नेह के कारण वे क्षण-भर के लिए मोहित हो गये। ऐसी ही घटना रुक्मिणी-हरण के समय हुई बतलाई जाती है। रुक्मिणी-हरण करने के बाद कृष्ण पर सारे राजाओं ने आक्रमण कर दिया तो रुक्मिणी क्षण-भर के लिए मोहग्रस्त हो गई थीं जब तक कि भगवान् ने उचित कदम नहीं उठाये।

तं तालुमूलं प्रदहन्तमग्निवद्

गोपालसूनुं पितरं जगद्गुरोः ।

चच्छर्द सद्योऽतिरुषाक्षतं बक-

स्तुण्डेन हन्तुं पुनरभ्यपद्यत ॥ ५० ॥

शब्दार्थ

तम्—उसको; तालु-मूलम्—गले के नीचे; प्रदहन्तम्—जलाते हुए; अग्नि-वत्—आग की तरह; गोपाल-सूनुम्—ग्वाल-पुत्र, कृष्ण को; पितरम्—पिता को; जगत्-गुरोः—ब्रह्मा के; चच्छर्द—उसके मुँह से निकल आये; सद्यः—तुरन्त; अति-रुषा—अत्यधिक क्रोध से; अक्षतम्—बिना किसी तरह चोट खाये; बकः—बकासुर; तुण्डेन—तेज चोंच से; हन्तुम्—मार डालने के लिए; पुनः—फिर; अभ्यपद्यत—प्रयास किया।

कृष्ण जो ब्रह्मा के पिता हैं किन्तु ग्वाले के पुत्र की भूमिका निभा रहे थे, अग्नि के समान बन कर असुर के गले के निचले भाग को जलाने लगे जिससे बकासुर ने तुरन्त ही उन्हें उगल दिया। जब असुर ने देखा कि निगले जाने पर भी कृष्ण को कोई क्षति नहीं पहुँची तो तुरन्त ही उसने अपनी तेज चोंच से कृष्ण पर फिर वार कर दिया।

तात्पर्य : यद्यपि कृष्ण कमल की भाँति कोमल हैं किन्तु बकासुर के गले में उन्होंने अग्नि से भी बढ़कर जलन उत्पन्न कर दी। यद्यपि कृष्ण का सारा शरीर मिश्री से भी मीठा है किन्तु वह बकासुर को इतना कडुवा लगा कि उसने तुरन्त ही कृष्ण को उगल दिया। भगवद्गीता (४.११) में ठीक ही कहा गया है—ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। जब कृष्ण को शत्रु मान लिया जाता है, तो वे अभक्त के लिए असह्य बन जाते हैं और वह उन्हें भीतर-बाहर से सहन नहीं कर सकता है। यहाँ पर बकासुर इसका साक्षात् प्रमाण है।

तमापतन्तं स निगृह्य तुण्डयो-

दोर्भ्यां बकं कंससखं सतां पतिः ।

पश्यत्सु बालेषु ददार लीलया

मुदावहो वीरणवद्विवौकसाम् ॥ ५१ ॥

शब्दार्थ

तम्—बकासुर को; आपतन्तम्—उन पर आक्रमण करने के लिए पुनः उद्यत; सः—भगवान् कृष्ण ने; निगृह्य—पकड़ कर; तुण्डयोः—चोंच; दोर्भ्याम्—अपनी बाहुओं से; बकम्—बकासुर को; कंस-सखम्—कंस के संगी; सताम् पतिः—वैष्णवों के स्वामी कृष्ण ने; पश्यत्सु—देखते देखते; बालेषु—ग्वालबालों के; ददार—दो टुकड़े कर दिये; लीलया—आसानी से; मुदा-आवहः—मनमोहक कार्य; वीरण-वत्—वीरण घास के तुल्य; दिवौकसाम्—स्वर्ग के निवासियों के लिए।

जब वैष्णवों के नायक कृष्ण ने यह देखा कि कंस का मित्र बकासुर उन पर आक्रमण करने का प्रयास कर रहा है, तो उन्होंने अपने हाथों से उसकी चोंच के दोनों भागों (ठोरों) को पकड़ लिया और सारे ग्वालबालों की उपस्थिति में उसे उसी प्रकार चीर डाला जिस तरह वीरण घास (गाँडर) के डंठल को बच्चे चीर डालते हैं। कृष्ण द्वारा इस प्रकार असुर के मारे जाने से स्वर्ग के निवासी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

तदा बकारिं सुरलोकवासिनः

समाकिरन्नन्दनमल्लिकादिभिः ।

समीडिरे चानकशङ्खसंस्तवै-

स्तद्वीक्ष्य गोपालसुता विसिस्मिरे ॥ ५२ ॥

शब्दार्थ

तदा—उस समय; बक-अरिम्—बकासुर के शत्रु को; सुर-लोक-वासिनः—स्वर्गलोक के वासियों ने; समाकिरन्—फूल बरसाये; नन्दन-मल्लिका-आदिभिः—नन्दन कानन में उत्पन्न मल्लिका आदि फूलों से; समीडिरे—उनको बधाई भी दी; च—तथा; आनक-शङ्ख-संस्तवैः—दुन्दुभी, शंख तथा स्तुतियों द्वारा; तत् वीक्ष्य—यह देखकर; गोपाल-सुताः—ग्वालबाल; विसिस्मिरे—आश्चर्यचकित थे।

उस समय स्वर्गलोक के वासियों ने बकासुर के शत्रु कृष्ण पर नन्दन-कानन में उगी मल्लिका के फूलों की वर्षा की। उन्होंने दुन्दुभी तथा शंख बजाकर एवं स्तुतियों द्वारा उनको बधाई दी। यह देखकर सारे ग्वालबाल आश्चर्यचकित थे।

मुक्तं बकास्यादुपलभ्य बालका

रामादयः प्राणमिवेन्द्रियो गणः ।

स्थानागतं तं परिरभ्य निर्वृताः

प्रणीय वत्सान्त्रजमेत्य तज्जगुः ॥ ५३ ॥

शब्दार्थ

मुक्तम्—इस प्रकार छूटा हुआ; बक-आस्यात्—बकासुर के मुख से; उपलभ्य—वापस पाकर; बालकाः—सारे बालक, संगी; राम-आदयः—बलराम इत्यादि; प्राणम्—प्राण; इव—के समान; इन्द्रियः—इन्द्रियाँ; गणः—समूह; स्थान-आगतम्—अपने अपने स्थान पर जाकर; तम्—कृष्ण को; परिरभ्य—चूमते हुए; निर्वृताः—संकट से मुक्त हुए; प्रणीय—एकत्र करके; वत्सान्—बछड़ों को; व्रजम् एत्य—व्रजभूमि लौट कर; तत् जगुः—घटना का जोर-जोर से बखान किया।

जिस प्रकार चेतना तथा प्राण वापस आने पर इन्द्रियाँ शान्त हो जाती हैं उसी तरह जब कृष्ण इस संकट से उबर आये तो बलराम समेत सारे बालकों ने सोचा मानो उन्हें फिर से जीवन प्राप्त हुआ हो। उन्होंने कृष्ण का पूरी चेतना के साथ आलिंगन किया और अपने बछड़ों को समेट कर वे व्रजभूमि लौट आये जहाँ उन्होंने जोर-जोर से इस घटना का बखान किया।

तात्पर्य : जब भी कृष्ण असुरों को मारने की विभिन्न लीलाएँ करते तो व्रजभूमि के वासी जंगल में हुई घटनाओं पर कविता बनाते। वे सारी कहानियाँ पद्यबद्ध कर लेते या पेशेवर कवियों से करवा लेते और तब इन घटनाओं को गाया करते। अतः इस श्लोक में कहा गया है कि लड़के जोर-जोर से गा रहे थे।

श्रुत्वा तद्विस्मिता गोपा गोप्यश्चातिप्रियादृताः ।

प्रेत्यागतमिवोत्सुक्यादैक्षन्त तृषितेक्षणाः ॥ ५४ ॥

शब्दार्थ

श्रुत्वा—सुन कर; तत्—वह घटना; विस्मिताः—आश्चर्यचकित; गोपाः—ग्वाले; गोप्यः च—तथा गोपियाँ; अति-प्रिय-आदृताः—समाचार को बड़े आदर से सुना; प्रेत्य आगतम् इव—मानों ये बालक मृत्यु के मुख से लौट कर आये हों; उत्सुक्यात्—बड़ी उत्सुकता से; ऐक्षन्त—बालकों पर दृष्टि डालते हुए; तृषित-ईक्षणाः—पूर्ण सन्तोष से, कृष्ण तथा बालकों से आँखें फेरने का मन नहीं हो रहा था।

जब ग्वालों तथा गोपियों ने जंगल में बकासुर के मारे जाने का समाचार सुना तो वे अत्यधिक विस्मित हो उठे। कृष्ण को देखकर तथा उनकी कहानी सुन कर उन्होंने कृष्ण का स्वागत बड़ी उत्सुकता से यह सोचते हुए किया कि कृष्ण तथा अन्य बालक मृत्यु के मुख से वापस आ गये हैं। अतः वे कृष्ण तथा उन बालकों को मौन नेत्रों से देखते रहे। अब जबकि बालक सुरक्षित थे, उनकी आँखें उनसे हटना नहीं चाह रही थीं।

तात्पर्य : कृष्ण के प्रति प्रगाढ़ प्रेम के कारण ग्वाले तथा गोपियाँ यह सोचते हुए कि कृष्ण तथा अन्य बालक किस तरह बच कर आये हैं, शान्त रह गईं। वे सब उन्हें देखते ही रहे तथा उन्होंने अपनी आँखों को दूसरी ओर घुमाना नहीं चाहा।

अहो बतास्य बालस्य बहवो मृत्यवोऽभवन् ।

अप्यासीद्विप्रियं तेषां कृतं पूर्वं यतो भयम् ॥ ५५ ॥

शब्दार्थ

अहो बत—यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है; अस्य—इस; बालस्य—कृष्ण का; बहवः—अनेक; मृत्यवः—मृत्यु के कारण; अभवन्—आये; अपि—फिर भी; आसीत्—था; विप्रियम्—मृत्यु का कारण; तेषाम्—सबों का; कृतम्—किया हुआ; पूर्वम्—पहले; यतः—जिससे; भयम्—मृत्यु-भय था।

नन्द महाराज तथा अन्य ग्वाले विचार करने लगे: यह बड़े आश्चर्य की बात है कि यद्यपि इस बालक कृष्ण ने अनेक बार मृत्यु के विविध कारणों का सामना किया है किन्तु भगवान् की कृपा से भय के इन कारणों का ही विनाश हो गया और उसका बाल बाँका भी नहीं हुआ।

तात्पर्य : ग्वालों ने सहज भाव से सोचा, “क्योंकि हमारा कृष्ण निर्दोष है, अतः मृत्यु के वे कारण ही विनष्ट हो गये जो उनके समक्ष उपस्थित हुए। कृष्ण का बाल बाँका भी नहीं हुआ। यह भगवान् की सबसे बड़ी कृपा है।”

अथाप्यभिभवन्त्येनं नैव ते घोरदर्शनाः ।

जिघांसयैनमासाद्य नश्यन्त्यग्नौ पतङ्गवत् ॥ ५६ ॥

शब्दार्थ

अथ अपि—यद्यपि उन्होंने आक्रमण करना चाहा; अभिभवन्ति—मारने में सक्षम हैं; एनम्—इस बालक को; न—नहीं; एव—निश्चय ही; ते—वे सब; घोर-दर्शनाः—देखने में भयावने; जिघांसया—ईर्ष्या के कारण; एनम्—कृष्ण के; आसाद्य—पास आकर; नश्यन्ति—नष्ट हो जाते हैं (आक्रामक की मृत्यु होती है); अग्नौ—अग्नि में; पतङ्ग-वत्—कीटों के समान।

यद्यपि मृत्यु के कारणरूप दैत्यगण अत्यन्त भयावने थे किन्तु वे इस बालक कृष्ण को मार नहीं पाये। चूँकि वे निर्दोष बालकों को मारने आये थे इसलिए ज्योंही वे उनके निकट पहुँचे त्योंही वे उसी तरह मारे गये जिस तरह अग्नि पर आक्रमण करने वाले पतङ्गे मारे जाते हैं।

तात्पर्य : नन्द महाराज ने सहज भाव से सोचा, “शायद इस बालक ने पूर्वजन्म में इन असुरों को मारा हो इसलिए इस जीवन में वे उससे ईर्ष्या करके उस पर आक्रमण कर रहे हैं। लेकिन कृष्ण अग्नि हैं और वे पतङ्गे हैं और अग्नि तथा पतङ्गों की लड़ाई में अग्नि ही विजयी होती है।” असुरों तथा भगवान् की शक्ति के बीच सदैव युद्ध चलता रहता है। *परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्* (*भगवद्गीता* ४.८)। जो भी भगवान् के नियंत्रण के विरुद्ध हो उसका वध जन्म-जन्मांतर किया जाना चाहिए। सामान्य प्राणी कर्म के वशीभूत हैं किन्तु भगवान् सदा ही असुरों पर विजय पाते हैं।

अहो ब्रह्मविदां वाचो नासत्याः सन्ति कर्हिचित् ।
गर्गो यदाह भगवानन्वभावि तथैव तत् ॥ ५७ ॥

शब्दार्थ

अहो—कितना आश्चर्यजनक है; ब्रह्म-विदाम्—ब्रह्म-ज्ञान से युक्त व्यक्तियों के; वाचः—शब्द; न—कभी नहीं; असत्याः—झूठ; सन्ति—होते हैं; कर्हिचित्—किसी भी समय; गर्गः—गर्गमुनि ने; यत्—जो भी; आह—भविष्यवाणी की थी; भगवान्—परम शक्तिशाली; अन्वभावि—वही हो रहा है; तथा एव—जैसा; तत्—वह ।

ब्रह्म-ज्ञान से युक्त पुरुषों के शब्द कभी झूठे नहीं निकलते। यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि गर्गमुनि ने जो भी भविष्यवाणी की थी उसे ही हम विस्तार से वस्तुतः अनुभव कर रहे हैं।

तात्पर्य : मानव जीवन के उद्देश्य का ब्रह्मसूत्र में संकेत किया है—*अथातो ब्रह्मजिज्ञासा*। अपना जीवन पूर्ण बनाने के लिए—चाहे भूत हो, वर्तमान या भविष्य—मनुष्य को ब्रह्म के विषय में जानना चाहिए। तीव्र स्नेह के कारण नन्द महाराज कृष्ण को यथार्थ रूप में नहीं समझ पाये। गर्गमुनि वेदों का अध्ययन करने से भूत, वर्तमान तथा भविष्य की हर बात जान सकते थे किन्तु नन्द महाराज कृष्ण को सीधे नहीं समझ पाये। कृष्ण के प्रति गहन प्रेम के कारण वे भूल गये कि कृष्ण कौन हैं और वे कृष्ण की शक्ति को समझ नहीं पाये। यद्यपि कृष्ण साक्षात् नारायण हैं किन्तु गर्गमुनि ने इसको प्रकट नहीं किया। इसलिए नन्द महाराज को गर्गमुनि के शब्द अच्छे लगे किन्तु गहन प्रेम के कारण वे यह नहीं समझ पाये कि कृष्ण कौन हैं यद्यपि गर्गमुनि ने कहा था कि कृष्ण के सारे गुण नारायण के ही समान होंगे।

इति नन्दादयो गोपाः कृष्णरामकथां मुदा ।
कुर्वन्तो रममाणाश्च नाविन्दन्भववेदनाम् ॥ ५८ ॥

शब्दार्थ

इति—इस प्रकार; नन्द-आदयः—नन्द महाराज इत्यादि; गोपाः—गवाले; कृष्ण-राम-कथाम्—भगवान् कृष्ण तथा राम सम्बन्धी घटनाओं की कथा को; मुदा—बड़े ही आनन्द से; कुर्वन्तः—करते हुए; रममाणाः च—आनन्द लेते हुए तथा कृष्ण के प्रति प्रेम बढ़ाते हुए; न—नहीं; अविन्दन्—अनुभव किया; भव-वेदनाम्—इस संसार के कष्टों को।

इस तरह नन्द समेत सारे गवालों को कृष्ण तथा बलराम की लीलाओं सम्बन्धी कथाओं में बड़ा ही दिव्य आनन्द आया और उन्हें भौतिक कष्टों का पता तक नहीं चला।

तात्पर्य : यहाँ पर श्रीमद्भागवत में आई कृष्ण-लीलाओं के अध्ययन या विचार-विमर्श करने के परिणाम के विषय में शिक्षा है। *सद्यो हृद्यवरुध्यतेऽत्र कृतिभिः शुश्रूषुभिस्तत्क्षणात्* (भागवत १.१.२)। नन्द महाराज तथा यशोदा का प्राकट्य वृन्दावन में इस भौतिक जगत के सामान्य व्यक्तियों की ही तरह

हुआ किन्तु उन्हें इस जगत के कष्टों का कभी अनुभव नहीं हुआ, भले ही उन्हें कभी कभी असुरों के उत्पातों का सामना करना पड़ा हो। यह व्यावहारिक उदाहरण है। यदि हम नन्द महाराज तथा गोपों के चरणचिह्नों का अनुसरण करें तो हम कृष्ण-लीलाओं के विषय में विचार-विमर्श करने से ही सुखी बन सकते हैं।

अनर्थोपशमं साक्षाद् भक्तियोगमद्योक्षजे ।

लोकस्याजानतो विद्वांश्चक्रे सात्वतसंहिताम् ॥

(भागवत १.७.६)

व्यासदेव ने यह ग्रंथ इसीलिए लिखा है कि हर व्यक्ति *भागवत-कथा* की विवेचना करने से ही अपने दिव्य पद को समझ सके। आज भी *श्रीमद्भागवत* का अनुसरण करके प्रत्येक व्यक्ति कहीं रह कर भी भौतिक कष्टों से मुक्त हो सकता है। उसके लिए किसी प्रकार की तपस्या करने की आवश्यकता नहीं क्योंकि इस युग में तपस्या करना अत्यन्त कठिन है। इसीलिए चैतन्य महाप्रभु ने कहा है—*सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसङ्कीर्तनम्*। हम अपने कृष्णभावनामृत आन्दोलन द्वारा *श्रीमद्भागवत* का वितरण करने में लगे हैं जिससे संसार के किसी भी कोने में रहने वाला व्यक्ति कृष्ण की लीलाओं के विषय में कीर्तन एवं श्रवण करके कृष्णभावनामृत आन्दोलन में समा सके तथा समस्त भौतिक तापों से मुक्त हो सके।

एवं विहारैः कौमारैः कौमारं जहतुर्व्रजे ।

निलायनैः सेतुबन्धैर्मर्कटोट्प्लवनादिभिः ॥ ५९ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; विहारैः—विभिन्न लीलाओं द्वारा; कौमारैः—बाल्योचित; कौमारम्—बाल्यावस्था; जहतुः—बिताई; व्रजे—व्रजभूमि में; निलायनैः—आँख-मिचौनी खेलते हुए; सेतु-बन्धैः—समुद्र में नकली पुल बनाते हुए; मर्कट—वानरों की तरह; उत्प्लवन-आदिभिः—इधर-उधर कूदते-फाँदते।

इस तरह कृष्ण तथा बलराम ने व्रजभूमि में बच्चों के खेलों में, यथा आँख-मिचौनी खेलने, समुद्र में पुल बनाने का स्वांग करने तथा बन्दरों की तरह इधर-उधर कूदने-फाँदने में अपनी बाल्यावस्था व्यतीत की।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दशम स्कंध के अन्तर्गत “कृष्ण की बाल-लीलाएँ” नामक ग्यारहवें अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।